2014

M.A.

1st Semester Examination

HINDI

Paper – HIN 102

Time : 2 Hours

Full Marks : 40

The figures in the margin indicate Full Marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

किन्ही *दो* प्रश्नों के उत्तर दीजिएः- 12×2

1. विद्यापति की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।
2. 'सूर के वात्सल्य वर्णन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
3. 'मीरा के काव्य में प्रेम और भक्ति का अनूठा संगम मिलता है' - स्पष्ट कीजिए।
4. प्रेम-पीर के रीतिमुक्त कवि धनानन्द की प्रेम भावना पर प्रकाश डालिए।

किन्हीं *दो* अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 8×2

क) कातसुख सार पाओल तुअ तीरे। छाड़इते निकट नयन बह नीरे।
कर जोरि विनमओं विमल तरंगे। पुन दरसन होअ पुनगति गंगे।
एक अपराध हेमब्य मोर जानी। परसल माए पाए तुअ पानी।
कि करब जप तप जोग धेआने। जनम कृतारथ एकहि सनाने।
मनइ बिद्यापति समदओं तोहि। अंत काल जनु बिसरह मोहि।

(ख) आयो धोष बड़ो व्यापारी।

लाद खेप गुन ज्ञान जोग की ब्रज में आय उतारी।

फाटक दैकर हाटक माँगत मोरै निपट सुधारी।

धुर ही तें खोटो खायो है लए फिरत सिर भारी।
इनके कहे कौनऽहकावै ऐसी कौन अपानी ?
अपनो दुध हाँड़ि को पीवै खार छूप कों पानी।।
अधो जाहु सबार यहाँ तें बेगि गहरु जनि लावौ।
मुँहमाँग्यो पैहो सूरज प्रनु साहुहि आनि दिखावौ।

(ग) आली री म्हारे णैणाँ बाण पड़ी।
चित्त चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिबड़ाअणी गड़ी।
कब री ठाड़ी पेथ निहार, अपने भवण खड़ी।
अटक्याँ प्राण साँवरों प्यारो, जीवन मूल जड़ी।
मीराँ गिरिधर हाथ बिकाणी, लोग कहयाँ बिगड़ी।

(घ) बधिक सुधि लेत सुन्यौ हति कै गति रावरी क्यों हूं न बूझि परै।
मति आवरी-बावरी हैं जकि जाय उपाय कहूँ किन सुझि परै।
घनआनंद यौं अपनाय तजी इन सोचनि ही मन मूझि परै।
दिनरैन सुजान बियोग के बान सहै जिय पापी न जूझि परै।